॥ॐ नम [illegible] स्वायाग [illegible] लविधा [illegible] ॥अम
इदंनम [illegible] ला [illegible] मेंडुरवं [illegible] गाढ़े
लमालस [illegible] योंहाचे [illegible] गए.दुख [illegible] लाडे.डौं
[illegible] गाव [illegible] हुँवन [illegible] गव
[illegible] वरुड [illegible] बाबा
याम [illegible] व [illegible] गं [illegible] लाव [illegible]
ह

ASHA ARCHIVES [illegible] 1347

गर्बानर्थं [illegible] पार्ग ॥ [illegible] पारस ल ॥ अघान वनीलिनधूपथ ॥ अष्ट
मकुनज [illegible] बवधनावछ [illegible] ॥ मज [illegible] मगीकुल ॥ मका अन्धन हस्रथ ॥ पाता
[illegible] कान वाय ॥ बन्धनसिं [illegible] महछि [illegible] मकपूष्य कर्दुपर
[illegible] नवादि मनालवावनव [illegible] सैरावथन ॥ [illegible] थागिनीय
[illegible] तुमयल ॥ स्वचनादि यचवी [illegible] समागाय ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] हर्य मेष्ठलाय धावगा [illegible] ननःआ [illegible] मकु ॥ व्रक [illegible]

[illegible] नसम्गर्वे ॥ [illegible] मानथ० ॥ [illegible]
[illegible] नूवछिपुलाष [illegible] हद्बोलीकावन [illegible]
[illegible] नमाःस्मु [illegible] लविर्तकृ
[illegible] ॥ अघानाहु मकुम [illegible] ॥ [illegible] पगाव्ध
कृष निलं [illegible] धवव ॥ [illegible] मक्रियादवन
कागश्मल ॥ धर्व [illegible] कुल कार [illegible] नगोधनयायर्ती

कानधाय॥ धयव वुर्थधन मा [illegible] धवि इदु वीन [illegible] य ॐ बधी जिचनयथ चनुग
यावक्काय॥ [illegible] निर्म्माणयाय॥ यथावीनजनानुहावनं त्रिप्र
वानद [illegible] नाव [illegible]॥ लिग [illegible] या धास लॆ अखुली वानक्कि ॥ [illegible] का
यतन [illegible]॥ [illegible] स त्रिप्रकानस धूगं ॥ अं उक्ष प्रमानन
न [illegible]॥ तपाद्कर्यगं॥ [illegible] सनं वीनकू [illegible]
न [illegible]॥ [illegible] यथि वावी [illegible] लिसे।
ॐ [illegible] धादे [illegible] वासन [illegible] वकीधाय॥ [illegible] न

[illegible] श्रवास [illegible] नलिता
न [illegible] नाथं ॐ [illegible] वयाग [illegible] निमि [illegible] वहेहान
वं [illegible]॥ हुग कलिकल स्वक्ष [illegible] यज मानन
न्यासा [illegible] खति मूर्खं क्काय॥ ॐ॥ आधना द्यक्षय
क्कासनं॥ ॐ [illegible] तामने [illegible] श्रीमलावि घाना ॐ ग्वनी [illegible] पाचू ॐ॥
वू॥ बलि॥ ॐ बवाह [illegible]॥ नाकं॥ मूगन्धिचन्दन नैव वीन पाचा धभव
व॥ दक्ष्कादक्ष न प्रश्रालय धाय दूजा [illegible] न स्वगं॥ न [illegible] नयाय॥ [illegible]॥ धप्रकारन॥

कृत वदृक गंश नवात्मा श्री कण्ठ क्रम शिखास्वछन्द यापार्घ्यायक॥ मूल
न मूलमन्त्र विनाष, सकलगं कुर्यार्घ्यं॥ ॥याग्नालयं गत्वा स्वस्वासन सम
पविश्य॥ [illegible] ज्ञानं॥ श्यामानका॥ सिद्धिनमु क्रियान म्हत्यादि॥ गु
रूसमर्यासि॥ [illegible] ॥ॐ अर्घ्यादि सूर्यार्घ॥ गुरूनमस्कान न्यासादृष्मा
[illegible] कार्वन॥ ॐ आधारशक्ति कमलासनाय यायूजा॥
[illegible] ॥ [illegible] नाय पायूजा॥ ॐ सिंहासन पायूजा॥ [illegible] नादि प्रभृति
[illegible] नन्द श्री नाथि [illegible] ध्यान [illegible] वनी॥

[illegible] ॥ वन्दनादिम [illegible] मानुसु
[illegible] समर्पयेत [illegible] धूप दीप [illegible] ॥ यामी
[illegible] स्वदेलि लासनक्रा ब्रह्माविष्णुघन्द सकल स्वगम गा
[illegible] निय स्व [illegible] नमग हनणा वाप हस्त कवाला श्यामान
कानूलाम [illegible] मवन [illegible] सनाथं॥ याप वीकृष्टिकाख्या क्रम कूलस
कलं मशुलस्क शुल वा कर [illegible] वयी॥ समनण गुनु वन यागिनी वीनवक्त॥ सव
श्रीकण्ठनाथी यजन पनिविधीं दीपयागादि पूज्यं विघ्नानं प्राप मन्त्रं स्वरिमगव

लदा नाजल क्ष्मी मदाम॥ ॥आध्दवी कुब्जि कास्था॥ अऐं कासरव वर्न्तु इषस निगमनं

सैनवानंद नूयं यक्त दिव्योम हर्त्लं यन गुञ्जलि न नमं कूर्ग वजगरवः॥ वामरव घा अंगु

लं स्फलक धनु [illegible] घीक्लों तकि वाधें वन अतयकानं पाशु मांकु

ब्जिनाथ३॥ [illegible] ताराजवक्रहू मनिता दाति मीकुब्जिदवी वक्रकंपति

नत्र [illegible] वनी सैनवानंदगा कि४ संक्षि वाध्दवडघ लकुलकुलगगा अच्चि

मूलवीजं नौमि श्री कुब्जिका मा त्रिभुवनजननी पातु नित्यं प्रपाहि ॥ ध्यामानक्रा त्रित

जास्यादि॥ निर्वि [illegible] वीन आ गमित्यादि॥ [illegible]॥ [illegible] दर्नी॥ म

[illegible] पायनवज्र

अधानादि८॥ सिं[illegible]सनाथ यापूजा॥ द [illegible] ॥ [illegible] आन [illegible] नसिंहयम

गो त्रुक्कन [illegible] नियाम गनि तुल सभाजं [illegible] कअु दिनिता [illegible] स्वदिया॥ ध्याय

॥ नीयन [illegible] यानद्रुन नवक्त आत्मनः॥ याति मण्डयापूष्पद्रुर्वा वाग संधृग न वक्तलूहत

स मावा [illegible] ध्यानयं७॥ ॥आवाहनं॥ महामाया विद्यानाअग्वनीय

वीआगक्कर [illegible]॥ ध्यान४॥ नकानकाम्बनधनाशिनतांदिपद

पिवी॥ नानानत्नविचित्रांगी वनवारयपानिनी॥ ध्यानपूर्ष्पं यापूजा॥ गनतध्यापहानं

पद्या७॥ वन्दन॥ श्रीरवणु वन्दुसं यक्रांति॥ सिन्दून॥ वीभग्वनी मालापनि॥ माहनी॥

भाहने कामसे यर्कंगि॥ यज्ञोपवीग॥ यज्ञोपवीगं धनममिगि॥ पुष्प॥ नानापुष्पं
सुगंधानीगि॥ कर्णुयगाका सिंदूर वस्तु दष्ठि॥ नानावस्तु विचित्राणीगि॥ ॥
तयाञरलि॥ [illegible] श्रीमहाविद्यानाजश्वनी हं २ पापूज॥ अघानवज्रवनीगि।
तयनपूजा॥ ओंओं हृदयादिषओं नपूजा॥ धेनूथा निमुद्रा दर्श्ये॥ ॥गग४वा
समर्पण॥ वनूवरक्तगंवीन सिंदूनामनूभादिगं लाकापकाल नार्थयनिर्म
लस्फटिकायमं॥ नमायनायं सर्वज्ञ ध्वबद्धेव वनिर्मिर्गि [illegible] नालय नं।
कमलस्कंनमाम्यहं॥ रक्तवीन ओं मय [illegible] ।[illegible] ।पुष्प [illegible]।
यचाक्षतं भवावालनमामिहं॥ स्वागगव [illegible] वाउ म। देव [illegible]
निमूर्का गश्विकन्नमगि त्वया॥ वलिरक्तमहावीन चनूनवथ [illegible] वंदुमत्वा
नीं निर्मलस्फटिकायमं॥ अन्नमक्तानमं दिव्यं सर्वहितमक्षादिग। निष्कलंसवाला त्व
तं पद्मपत्रनमाम्यहं॥ ॥ओ समस्तमन्त्र यी(०गि॥ ओंडकानूकीयत॥ चिकामलिसमर्प्यंदी॥
धूप॥ नानाग [illegible] णि॥ दीप॥ सर्वधवमयं दीप दीपम्हे त्र्य विनाशीनं।सर्वाक्षा र्थंगन
[illegible]गि दीप जत्रगिगेद्यो॥ आपमूलन॥ अमका कामनार्थं सिंदूर दक्षिणांतुर्यरत्रपदथं॥ ॥
स्तुगि॥ सिंदूनचन्दनविल पिगपुष्पमाला यज्ञोपवीगवस्ताञरनधूपदीपं।संपूर्णुया
x गं २

ग्मलिनानिषमीनयुक्तं ताम्बूलभोदकस्थलानि गिरूर्ध्वश्न ॥ एतानि सर्वानविनायत्रि
पूजितानि । देवीकुजायेदनि धवेगलाधसर्वं । संपूजिता ४ स्थलमिदं प्रियं ४ सं प्रदानि गा
न्ति ४ सदा रक्तु मंगलं दह लक्ष्मीः ४ ॥ ॥ धान्योदकादि सं द्याः पनमयदकथा वडुलैल
सनत्क ब्रह्माविष्णुधरुद्र ४ सकलखगमृगो हतानित्यं स्वनव्यो । गन्धमार्दं सुगन्धं धनम
गहन लावायहस्त यवाण । ध्यामानकानुलोमी पुनमगतवनी सिद्धिलोनी तनाथ ॥ याधं
वी कुब्जिकाख्या क्रमकुलसकलं । मङ्गलकृत्सिलवा दत्त वी मेवयी ० मगल कुरुवां यामि
नी वीनवृन्दं । देवश्रीकण्ठनाथाय [illegible]

मन वलया नागलक्ष्मी सदाना ॥ ध्यामानकात्रे नमः ॥ ॥ [illegible]
निराता तिमी बु ॰

॥ ओं नमो ऽस्तु कुब्जिकायै देवी । सर्वसिद्धार्थदायिनि । सर्वशान्ति
कानि नित्यं कुब्जिकायै नमो भगवती ॥ ॥ ओं निर्विघ्नं वीनयागस्तु ॥ आदिमध्यावसानवी । अस
मस्तु नमः कार्नलिवें रक्तु नित्यसः ॥ अत गन्धादि ॥ ॐ गिधागीनी पूजा ॥ ॥ अथ कायपूजा
ओं आधीनादि ८ ॥ ओं नमा सन्नपा पूजा ॥ वन्दनादि पूर्ववत ॥ पुष्पांजलि ॥ ७ ॥ ओं ह्रीं ह्रूं
पालायया पूजा ॥ बलि ॥ [illegible] मुद्रा ॥ स्तुति ॥ ओं आवीदत ॥ अतगन्धादि ॥ ७ ॥

अथ वटुकार्च्चनं ॥ ॐ आवाहनादि ८ ॥ ॐ मयुनासन पादुं ॥ ॐ ॥ वन्दनादि ॥ त्रयाञ्जलि ॥ ३ ॥
ॐ श्रीं क्रीं कुलपुत्र वटुकनाथाय पादुकां ॥ बलि ॥ षडङ्ग ॥ तर्ज्जनी मुद्रा ॥ स्तुति ॥ ॐ एकार्घ्यं बा
लवृये ॥ अतगन्धादि ॥ ॥ अथ गणपत्यर्च्चनं ॥ आवाहनादि ८ ॥ ॐ मूषासनाय पादुकां ॥ पूर्व्व
वत वन्दनादि ॥ त्रयाञ्जलि ॥ ३ ॥ ॐ गां गीं गूं गः ४ । ग्लौं श्री कुलगणेश्वराय पादुकां ॥ बलि ॥ षड
ङ्ग ॥ गज मुद्रा ॥ स्तुति ॥ विघ्न … र्त्तुं ॥ अतगन्धादि ॥ ॥ अथ नवात्मार्च्चनं ॥ आवाहनादि ८ ॥
ॐ गवासनपादुकां ॥ पूर्व्ववत … दि ॥ त्रयाञ्जलि ॥ ३ ॥ ॐ हं … आनन्दशक्तिरे नवानन्दवी
राधिपतये … श्री महाविद्याराज श्वेत नवात्मन … पादुकां ॥ बलि ॥ षडङ्ग

ना ३

त्रिशूलयानि मुद्रा ॥ स्तुति ॥ ॐ … द्विदयाद … गन्धादि ॥ ॥ अथ श्रीकं अ
र्च्चनं ॥ आवाहनादि ८ ॥ ॐ वृ… … ॥ ॐ सिंहासनाय पादुकां ॥ पूर्व्ववत वन्दनादि ॥ त्रयाञ्ज
लि ३ ॥ ॐ हैं ह आनन्दशक्तिः … न्दवीराधिपतये … श्रीक… नाथाय पादुकां ॥ ब
लि ॥ षडङ्ग ॥ त्रिशूलयानि मुद्रा ॥ स्तुति ॥ ॐ ऊर्ध्व मूलैकवक्त्रं ॥ अतगन्धादि ॥ ॥ अथ मा
तृका पूजा ॥ आवाहनादि ८ ॥ कमलादि पद्मासनं ॥ वन्दनादि पूर्व्ववत ॥ त्रयाञ्जलि ॥ ३ ॥ ॐ अ
घोरे … वरद विमल ऐं श्री ब्रह्माणी विश्व पादुकां ॥ … दि ८ ॥ बलि ॥ षडङ्ग ॥ पद्मा
… मुद्रा ॥ स्तुति ॥ ॐ ब्रह्माणी … ॥ अतगन्धादि ॥ ॥ अथ क्रमपूजा ॥ आवा

नादि [illegible] पद्मासन पादुकां॥ ॐ ह्वासन पादुकां॥ ॐ सिंहासन पादुकां॥ वन्दनादि पूर्ववत्
त्॥ तर्पयाञ्जलि ३॥ ॐ ह्रें स्थानन्द नाकिशे नवानन्द वीराधिपाय ह्रें स्त्री महाविद्याराज ध्व
नी अघोरविं गतिक्रम रद्दान कायपादुकां॥ बलिं॥ षडंग॥ धेनुयोनि मुद्रा॥ स्तुतिं॥ मध्ये तु
हा मनेष्ठा॥ अतत गंधादि॥ ॥अथ लिखा स्वच्छन्दार्च्चनं॥ ॐ आधारादि ८॥ ॐ ह्वासना
य पादुकां॥ ॐ पूर्ववत् वन्दनादि॥ तर्पयाञ्जलि॥ ३॥ ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं लिखा स्वच्छन्द महा
देवाय पादुकां॥ बलिं ह्रं॥ षडंग॥ पूर्वा कविर्णं नयात्रिकामलिद
ङ्गिना सर्व्वपदानंद द्यात्॥ धेनु मुद्रा॥ जयनमः॥ [illegible] वन्दनादि हं मानवनमवक्ष

४२
वक्ष लासनेष्ठा॥ यावदीक्षादि [illegible] नावसु॥ निर्व्विघ्नवीरजाग मि
त्यादि॥ अतत गन्धादि॥ ॥अथ वज्रवल्यर्च्चन॥ आधारादि॥ ८॥ मयूरादि स्ववास
नं॥ पूर्ववन्दनादि॥ स्वस्वमन्त्रेन तर्पयाञ्जलिं॥ बलि॥ षडंग॥ स्वस्वमुद्रा॥ स्तुतिं॥ ॥
ॐ ध वीकुर्वं विगाब त्यादि॥ अतत गंधादि॥ ॥इति वीरजन पूजाविधि ४॥ ॥ गता
गुरूणां जलेन यीनचूर्णेन वध्वा मण्डले पश्चात् पूजा वर्की र्णुदी पञ्चयं दत्वा सलाजा
ताय पुष्पाञ्जलि वस्त्रा धानी नि प्रष्ट गीत ४ प्राथना कर्त्तव्या॥ वाद्य॥ अरवणुआनमणु
ल्यं॥ ॥समानाद्यं॥ क्रमगत ४ सर्व्वके विना स्वस्वद वाद्यनि कुन २॥ यथा २ गुरूपद

×सर्व्व

ग्गेन धं मा र्च्चनकृत्वा ॥ ॥ ततो वीरजनेद्ववाद्येन कलशं गुरुनृत्य पश्च बलि वानृ
ली कृत्वा ध्ययं अर्घ्यं दत्वा आज्ञां प्रार्थय ७॥ ॥ पूर्व्ववत् मम गुलीकृत्वा आज्ञावाक्यं
॥ॐ आज्ञा प्रसाद गुरूणां गणयाग चक्र आज्ञा प्रसाद म[illegible]नी गणसिद्धि लक्ष्मी ४। आज्ञा
प्रसाद सगनं गणदेवतानां आज्ञा प्रसाद कुसुम ममदे हि देहि ॥ आज्ञां कथामि ॥ ॥
ततो गुरुनृत्यं आद्य कृत्वा गवाय थाथा(गा) दययुग्मा न मल कथ यथिमादिमुखाद्व वाच
नृपूजां कुर्यात् ॥ गुरुनमस्कारं ॥ न्यास[illegible] पूजा ॥ ॥ अथ रव्व चना वेदि
नृत्य श्मों विशुद्धी [illegible] पादपू[illegible] महालक्ष्मीय पादपूजा ॥

आवाहनादि ॥ ध्यानं ॥ ॐ नीलं शुक्लानन [illegible] त्रिशूल डाम्बमा
लं च विघ्नमिताम्हता लयं । खड्गेश्वर समारूढं विशुद्ध चक्र संस्थितं । ध्यावा उख
चनं पदं लक्ष्मी सौभाग्य दायकं ॥ पुष्पाञ्जलि ॥ ॐ चन्द्र वीपसम हुतं आनिश्च नं सुगो
तनं । आज्ञा विघ्नानं पदीपं कृत्वा लागनमा स्तुते ॥ ॐ क्लीं ह्रीं महाकालिकायै आं ह्रूं
कालाख्ये मों सौ ह्रूं स्त्रूं विशुद्धि साकिनीयै प्रद्याग पूजी रव सौ मानन्द पद पादपूजा ॥ ॐ
वागीश्वरी ह्रूं नं [illegible] गगनलोक लोगन कृ गामिनी गगणलोक जुम्ह सयस
विनी गगणानन्द पाद गगणा श्वार् ८ षष्ठि लक्ष्म्यादि सिद्धय ८ षष्ठि लक्ष्मा

टि सिद्धि वटुक सिद्धि योगिनी पादु ॥ ॐ ॥ ह्रां सर्व्वसंक्षोभणी मुद्रां दर्शयेत् ॥ बलिं ॥ जप
स्तुति ॥ खवनं सिद्धिदं रुद्र सर्व्वसं पालि दायकं । मात लक्ष्मी सदा नस्य लि वन्दे तं नमा
म्यु ॥ खवनार्च्चन विधेस्तु सर्व्व विधियवि पूर्णमस्तु ॥ १ ॥ खवनपूजनं ॥ ॐ ह्रीं श्री
हा वज्रासनाय पादुकां ॥ ॐ ह्रूं महासिद्धि खवनाथ पादुकां ॥ आवाहनादि ध्यानं
॥ ॐ पीनवक्षोनिरदेहं वना [illegible] हासी [illegible] लावनी ॥ जटुकुं ॐ पूतनादि कल्कवा
ॐ धूताम्रं । खवतासन हिताभानं यापिनं [illegible] ॥ [illegible] खवनं देवं दानि
मुनिपूघाननं ॥ ध्यानपूर्व्व पादुकां ॥ [illegible] सिद्धि [illegible] क्षुद्र मान
दगोदन्तं । कालिमकुलसयुक्तं कुनु [illegible] ध्यानं [illegible] अथानामखी
वक्षस्तु पाथे ॐ ह्रूं मन्त्राधि वां कीं कूं ह्रूं [illegible] योगी नी ये सुग पर्व विश्वानन्द
दवपादुकां ॥ ॐ खनाथे ह्रूं नत मर्व्व [illegible] लाकलान नर्व्व मामि नीम लो लाकऊना
सक्षसनणी मर्द्धोनिन्द खवनथ्यो द्वाऊस्ख लन्दाकाटि सिद्ध ऊस्ख लन्द काटि योगीनी पा
दुकां ॥ ह्रीं सर्व्वविद्रावणी मुद्रां दर्शयेत् ॥ बलिं ॥ जपस्तुति ॥ ॐ खवनं गुवेनं सर्व्व यावि ॐ दहा
गोवर्द्धन सिद्धि सयद दालक्ष्मी वृक्षन्तुयनमा म्युः ॥ खवनार्च्चन विधेस्तु सर्व्व वनि पूर्णम
स्तु ॥ २ ॥ जलखवनपूजनं ॥ ॐ ह्रीं मलिपूनक वज्रासनाय पादुकां ॥ ॐ ह्रूं महाजलखवन
खवन २

मूलेण पादपूजा ॥ आवाहनादिध्यानं ॥ ॐ कन्दर्पदिमसंकाशं मीनचक्रं त्रियम्बकं
। शूलिहस्तं मणिचक्रे शंखपात्रधृताह्वयं । मणिपूरकचक्रस्थं मकरासनसंस्थितं । श्री
वाञ्छलचनंदवं ध्यात्वा नागमुखप्रदं ॥ अञ्जलि ॥ ॐ नकामध्युलसंपूर्णं नकाकाक्षिप
तिष्ठितं ॥ नकारान्तप्रदायानं [illegible] नमास्तुते ॥ ॐ ज्रां ज्रीं ज्रूं वर्ष्व नागेश्वर [illegible] वर्ष्म
[illegible] लाँ लीं लूं [illegible] मणिपूरकलाकिनीय महाचक्रीज श्रीसानन्ददेवपादुका ॥ ॐ ह्रीं
नायत्री [illegible] लनागलोकधारन [illegible] नाम [illegible] हन सुधरानन्दी नागा
नन्द धर्व नागा [illegible] पादुका ॥ ॐ

ह्रीं सर्वाकर्षिणि मह [illegible] वलि [illegible] पवित्र पापनाश
नी । सिद्धिसौभाग्यदं तत्र विघ्नद्रूपनमास्तु ते ॥ ॐ [illegible] नविधेश्च [illegible] विधिव
विपूर्णमस्तु ॥ ३ ॥ [illegible] नपूजनं ॥ ॐ ह्रीं स्वाधिष्ठानचक्रासनाय पादुका ॥ ॐ [illegible] मह
[illegible] मूलेण पादपूजा ॥ आवाहनादिध्यानं ॥ ॐ नकवर्णं महागौरं सावित्री [illegible] त्रिलो
चनं । खड्गखट्वाङ्ग हस्तं च मुक्तापात्रधृतान्वयं । स्वाधिष्ठानकचक्रस्थं कल्पवृक्षस्थितासनं ।
एवं [illegible] नपनं धनदा [illegible] प्रदं ॥ पुष्पाञ्जलि ॥ ॐ ओजापूकादिसंस्थितं [illegible] पूजितं

ताधि बद्ध समाक्रान्त कालुलीगनमाः ह्नुग॥ ॐ क्षुँ क्षुद्रिवायै कुलदीपायै क्रौं ह्रूं पा
दाद्धे नाम ह्रूं स्रुं स्वाधिष्ठान नाकिनी यै धीध पूनी अनन्तगहीगानन्द देव पादुका॥ ॐ
माहनी ह्रूं नमय ह्रूं वनलोक राग गर्द्ध गामिनी पवन लोक कूम्हा सथक्ष नणीय वना
नन्द देव पवना स्वाधात गलकाटि सिद्धयाद्ग लन्द काटियोगिनी पादुका॥ ॐ ह्रूं सर्वव
गमदी दर्गधिता॥ वलि॥ जयस्तुति॥ ॐ नमः सर्व्वीर्यानि बलवीर्य्य विवर्द्धन। शा गमा दे स
पालकी रूद्र [illegible] नमाः ह्नुग॥ [illegible] धनि पूर्ज [illegible]॥७॥ सर्व्वचन्द्र पूज
नी॥ ॐ ॐ क्षौं आधारचक्रा [illegible] नाय पादुका॥ ॐ [illegible] महामर्व्व चन्द्र पूर्णय पादुका॥ ॥

आवाहनादि ध्यान ४॥ ध्याम [illegible] कार्य [illegible] द्विलाचनी उत्पल पद्म ह
स्त मलापात धृगालयौ। सा दाद्ध वीमह [illegible] श्रीमान वा [illegible] पनि। क्रमाध्यायत सर्व्वचन्द्र दे
वीं सर्व्व संयालि पायवी॥ तर्पयामि॥ २॥ ॐ वउ [illegible] धरकं अद्ध वउ क्षं पद्म में वउ४ स
र्व्वदीपाव लोकन्तु कालुलीगनमाः ह्नुग॥ ॐ नमो राग वनि [illegible] कमलायै क्रौं ह्रूं उवना
द्धेतनी ह्रूं स्रुं आधार ताकिनी यै मनः पूनी अखण्डीगानन्द देव पादुका॥ ॐ माया
यै ह्रूं नतस्व ह्रूं मलोक राग गर्द्ध गामिनी स्वर्गलोक जम्हा सथसन नीस्व र्गानन्द दे
व स्वर्गाधि वागी गलकाटि सिद्धयाद्ग गलकाटि योगिनी पादुका॥ मूर्द्धादर्ग

य ७। बलि ॥ जयस्तुति ॥ ॐ सर्व्वबन्धु पावतं पूर्ण्णं पविरंध ह्लागोधनं । ॐ ह्रूं क्वालि सिद्धि
या सर्व्व ॐ ग्लनमूं नमोऽस्तुते ॥ सर्व्वबन्धु बन्तविधे क्लसर्व्वं पवियूगुन्हे ॥ ॐ ॥ ॥
कालिपूजनं ॥ ॐ ह्रीं ॐ आह्लावकासनाय पाद्यं ॥ ॐ श्वुं कंकालिकादेवी पाद्यं ॥ आवा
हनादिध्यान ॥ ॐ नीलोऽञ्जननिरंदह चतुर्बाहुं त्रिलोचनं । खड्गं खटधरं देवं पूर्णयात्कान
द्धयं । मुलिमांसनवानितं विश्वसंसानवानवी । [illegible] ह्लिगातिर्थं कालीकालविनाशनं ॥
तृप्यांजलि ३ ॥ ॐ कालिकालि महाकालि मांस [illegible] । ॐ [illegible] देवी मा मां
पन्धनुसर्व्वथा ॥ ॐ कालनानन्दमिस्मादू [illegible] सर्व्व पापविनिर्मुक्ते [illegible] लीग

नमोऽस्तुते [illegible] आह्लादकिनीये पू ४
पनी [illegible] पाद्यं ॥ ॐ ह्रीं ॐ [illegible] लोकदांगगङ्गामि
नी [illegible] लोक [illegible] नन्ददेव [illegible] कलद्धाकाट्टि सिद्धिम
नकलद्धाकाट्टि यागिनी पाद्यं ॥ योनिमुद्रां दर्शयेत ७॥ बलि ॥ जयस्तुति ॥ ॐ नमस्ते कालिकादेवि
विशुद्धा निर्व्वाणदायका । व्याघ्रिणोकसर्यधात्रे कालमृत्यु हयापदे ॥ आयंसत्र यागोतार्थं ल
क्ष्मीसंपालिदायकं । काली महागनीलीन मानन्दासा मृगायनू ८॥ कालबर्व्वं तविधे क्लसर्व्व विधेय

त्रिपूर्व्वमस्तु ॥ ६ ॥ अथ द्वारपूजनं ॥ ॐ निरंजन कमलासनाय पादुकां ॥ ॐ सुद्धजासनाय पादु
कां ॥ ॐ ह्स्रौं सं सत्वाय वामस्त्रा त्रिवीदेवी श्रीपादुकां पूजयामि ॥ आवाहनादिध्यानं ४ ॥ ॐ चन्द्रका
दिमन्त्र्यू शान्ता जिनताय चतुर्भुजा । पूर्व्वे पांत धृगादेवी वनपाक मलाश्रया । वज्रालंकानदेवा
नं ४ सौताग्य सिद्धिं वामदां । तां वामसात्त्व कीदेवीं वक्ष्ये गर्किचध्यायेत ॥ तर्प्पांजलि ॥ ३ ॥ तत्मादि
तु क्षितिस्थान मण्डलं नवसंयुतं । अष्टा दलीं तु मदन [illegible] गुलीग नमो स्तुतं ॥ ॐ अधान क्रीं स्त
[illegible] [illegible] [illegible] निर्व्वाण [illegible] वी श्रीपादुका [illegible] ॥ अनन्तमुद्रा ॥ बलि ॥
ॐ पञ्चमी ॐ [illegible] [illegible] वी [illegible] नवानिशा । [illegible] यानि [illegible] सिद्धिप्रदा

[illegible] नी ॥ अथ पूजा द्वे नविधे [illegible] विधि [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] नं । ॐ पूर्व्वा
सनाय पादुकां ॥ [illegible] पादुकां ॥ ॐ ह्स्रौं [illegible] कीदेवी पादुकां ॥ आवा
हनादिध्यान ॥ ॐ ह्र्यं व्यकादि पुलि वामस युगरु-च्यू [illegible] भावनं । विद्युपात प्रभा पूर्व्वे मण्डलप
[illegible] या नानालंकान [illegible] नी [illegible] वामन [illegible] सिद्धिदां । तां नाज सान कीदेवी विघ्न गर्किच
ध्यायेत ॥ तर्प्पांजलि ३ । वज्र ४ पीठं तु [illegible] प्रभुविनी तथा । वाम [illegible] दत्तं पीठं [illegible] ली
ग नमो स्तुतं ॥ ॐ यन्म [illegible] धानान [illegible] वी तीन त्रिवणी वमपि [illegible] नन [illegible] जीं [illegible]
[illegible] विद्या [illegible] पाये [illegible] नमोकि पनायनाय निर्व्वाण कालिकायै देवी श्रीपादुकां ॥ बलि ॥

× क्रीं हूं श्रीं [illegible] २

थातिमण्डा॥ ॐ यः हुंगी॥ ॐ खगर्ज्जं नाजसी दवी नाजसं यादि हायीनी । सर्व्ववि घ्नविनाशाय सर्व्व
शापविमावनं॥ खगजार्ज्जुन विधिकत्तं व्र्वं यविहर्त्तुमस्तु॥ ॥अथ पाकजार्च्चनं॥ ॐ वज्र
मण्डलासनाय पाद्य पूजा॥ ॐ पाकजासनाय पाद्य पूजा॥ ॐ भ्रुं ग्रीं नामसात वीदवीश्री पाद्य पूजा॥ ॥
आवाहनादि ध्यान॥ ॐ पातालतल समुद्रवश्च [illegible] ॐ व दयी। वाद्यविह्व लि पूज्युति
याने जाग वनारुप्या। सर्व्व [illegible] गानवं नाग्रा सर्व्व [illegible] यन्दिसाय वा। सुनामसात वी यवी रूढ
[illegible] [illegible] ॐ लवान [illegible] ढकुंगी व समाहुंगा। मकुसिद्धि समरव्या
[illegible] [illegible] वेवत्वा यिवानथ [illegible] निर्देल हूद्रनीधवी

श्रीया पूजा॥ मर्जुं [illegible] बालिशा॥ य म हुंगी॥ यः कुरुं गमसा [illegible] सर्व्वकाम फलप्रदा।
[illegible] सर्व्व [illegible] सर्व्व गाक्तिवानं यनं॥ पाकजार्च्चनविधिकृतमर्ह्यं यदि [illegible] मस्तु॥ ॥
गदं ४ पोर पूजनं॥ पूर्व्ववदादि पद्ध्वाकं॥ गद्यथवि॥ ॐ अुमसं यनवज्र सूर्य्यागा दवप्र मस्तु
म दौति नंजन कमलासनाय पाद्य पूजा॥ ॐ माहापाशासनाय पाद्य पूजा॥ ॐ दीप्तिमण्डलाय दग
धर्म्मकलात्मन नम ४ पाद्य पूजा॥ संसामण्डु मण्डलाय धातगकलात्मन नम ४ पाद्य पूजा॥ आवाहना
दि ध्यानं॥ ॐ लादावमनि ताधं बीजवादाति मनागिनी। उर्द्धुंगवीतथी वत्या [illegible] गवान्हा
सेनी मदिनानन्दथ गक्षा दगाक्षाउजधान [illegible] नी॥ खड्ग त्रिशूल वज्र यविलिंगमं मद्गदगक्षा। गद

1.347 ASHA ARCHIVES

[illegible] वि वाति [illegible] ॥ [illegible] क्याल खद्वाङ्ग [illegible] ॥ नील [illegible]

[illegible] ॥ म [illegible] बिना ॥ [illegible] न ना [illegible]

[illegible] ॥ स [illegible] नवीन [illegible] ॥ [illegible] निल [illegible]

[illegible] ॥ ३ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] गाल मा [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] गा [illegible]

[illegible] ॥ ३ [illegible] नायै नाती [illegible]

ॐ भ्रं भ्रयाम [illegible] [illegible]भैरवाय ब्रह्माणी सहिताय बलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ १ ॥ ॐ
कौं ॐ कवर्गे [illegible] रुरुभैरवाय माहेश्वरी सहिताय बलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ २ ॥
ॐ चं ॐ चवर्गे धा [illegible] चण्डभैरवाय कौमारी सहिताय बलिं गृह्ण २०० ॥ ॐ टं ॐ ट
वर्गे [illegible] हासकृताय क्रोधभैरवाय वैष्णवी [illegible] ताये बलिं गृह्ण २०० ॥ ४ ॥ ॐ तं ॐ
तवर्गे जयकी [illegible] ताय उन्मत्तभैरवाय वाराही सहिताय बलिं गृह्ण २०० ॥ ५ ॥ ॐ पं ॐ
पवर्गे वनि [illegible] ताय कपालभैरवाय इन्द्राणी सहिताय बलिं गृह्ण २०० ॥ ६ ॥ ॐ यं ॐ
यवर्गे [illegible] काम [illegible] ताय भीषणभैरवाय चामुण्डा सहिताय बलिं गृह्ण २०० ॥ ॐ शं ॐ

शवर्गे [illegible] ताय संहारभैरवाय महालक्ष्मी सहिताय बलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ ८॥
ॐ हं [illegible] भैरवाय बलिं गृह्ण २ स्वाहा॥ एवं दिक्पूजनम्॥ अग्निध्वाल। अग्निजिह्व। काल
ख्या॥ कपालीश॥ एकपाद। भीमरूप। नाटक। अचल। [illegible] रासुर॥ ॥ॐ लं [illegible] ताय ब
लिं गृह्ण २ स्वाहा॥ इं अग्नि। यं यम। क्षं नैरृत्य। [illegible]। यं वायु। कुं कुबेर। ईं ईशा
न। [illegible] ब्रह्म। [illegible]॥ ॥ॐ वज्राद्ये बलिं [illegible] स्वाहा॥ [illegible] आये। [illegible]
[illegible]। [illegible] ये। [illegible]। [illegible] नाये। [illegible]। [illegible]। [illegible]

[illegible] रूपायै । [illegible] नाजिनायै । मल्लकन्यै । बिन्दुमालिन्यै । [illegible] ध्वांक्षायै । ज्म
[illegible] कायै । [illegible] । महायै । दंष्ट्रायै । [illegible] वक्त्रै । पिङ्गलायै । पृथ्वालिन्यै । अ
[illegible] । मन्यसायै । तदवायै । शुष्कायै । सद्रायै । [illegible] नायै । [illegible] कोशायै ॥ ॐ अघोर जां
जूं ह्रीं सर्वदीपाग्नि भागिनी याविनि [illegible] २ स्वाहा ॥ ॥ गणा दीप प्रक्षालनं ॥ मन्त्र ॥ ॐ
दीप प्रक्षालय २ स्वाहा ॥ ॐ स्वस्ति कुर्य्यात्सदा विघ्नं १ स्वस्तिदं वाधिदवता । थामिनी स्व
स्ति सर्वार्थि १ स्वस्ति पीठम [illegible] १ स्वस्ति कुर्य्यात् महामाया स्वास्ति विघ्नविन्दुना । पृथिव्या
दि १ सदा स्वस्ति नाशुवनत्रये । थामिनी स्वस्ति पीठस्थ देवी वदित्यदवता । स्वस्तिद वाधिदवतो

मन्त्र ॥ [illegible] । नारिकेलस्य हस्तात् [illegible] दीपमनोहरं । प्रकाश [illegible] ज्ञान विज्ञा
न सौरवं । हव्यकल्याणि [illegible] स्वस्ति कुलाधिदेवता । देवि [illegible] सर्व शान्तिरूप नमो
स्तुते ॥ वामनस्त्रिनयनं दीपं [illegible] पापनाशनं । दहन्ति सर्वपापानि [illegible] जन्मकृतानि वै ।
ज्ञानाधिकमिदं दीपं पवित्रं धनसाधनं । सर्वदीपावलोकानां सर्वसिद्धि [illegible] । स्व
[illegible] । [illegible] । स्वस्ति
[illegible] १ [illegible] ॥ ॥ [illegible] ॥ ॥
[illegible] ॥ ॐ [illegible]

य श्रीपादुकां ॥ आवाहनादि [illegible] ६ तनकानकान्तु क्रा [illegible] पदमद्मगनाता ॥ लिखवाति
मोगा थ्या वाव [illegible] [illegible] । कामक वालकं अलि
पिसितन ग हृदयपूर्ण घूर्णन विंदुरीमानस्याय । [illegible] पनमदा मयमानुद्भव [illegible] त्र्यलि
लिं ॥ ९ ॥ ॐ सूर्य्यकोटिसहस्राणि बन्धुका ॥ ६ समकं ग ४ महासुनामि द्वीपा विदिशाबद्धकीदन
नउ ॥ ॐ हूं सिद्धाय पादद्वयं पादुका ॥ ॐ त्यादि पादुका हूँ ॥ ॐ ह्रीं सर्वसिद्धिनाथ द्रव्यायनम
पादुका ॥ ॐ त्यादि घटं अं ॥ कृद्धानं । वे [illegible] । वनानि ॥ हूँ [illegible] ॥ अग्निघण्ट ॥ ॐ नौंत्रि नूं न
मोन ४ ॥ धनूद्यानि मद्रा ॥ बलि ४ ॐ यत्तु [illegible] ॥ [illegible] हृदि सहान नूपं क्लिंकिमचितउवनं सर्वदवम

यमं हूं खं सर्वसिद्धिस्तु वहून सुननं साधकासिद्धिवामं । सर्वकार्म्मप्रवानी सकल
भुनमयं वादिम थ्याकुसस्कं संसानसानह [illegible] क्षि मिन हनहनं गजभूयनमामि ॥ दीयाद्धन
विधेस्कलत्वं पात्रिपूर्णमस्तु ॥ ॥ नना तुनदीयमहाकाया योगिनी प्रदागि वीनउन नमस्का
गयिरुस्वामय ७ ॥ मनु ॥ ॐ श्रीसंवर्त्ताहूरं ॥ ॥ हवीलाग ४ ॥ पञ्च बलि लाग ४ ॥ थ्यानि न्याकिम
दुवीनउ नाना भक्ष्य दत्वा ॥ दीपथागान मनु ४ ॥ ॐ अ [illegible] जावलि [illegible] ॥ अनादिधाधसंकास
मिनि ॥ ॐ अमृत २ अमृतानुद्भवाय वज्र [illegible] स्वाहा ॥ ॐ नौं नौं नूं पश्चा [illegible] ४ पञ्चगानि [illegible] वि नीप्र
कामनकार्य स्वाहा ॥ अमृत [illegible] मनुस्य पाद्य [illegible] ७ ॥ वालरदनं ॥ दीपथागयानि ॥

[illegible] र्क्षं यंत्र के वस्थं ॥ [illegible] ॥ [illegible] दि वद्धं स ८ [illegible] थे यत ॥ [illegible] ॥

वीनतुलाकूनल ॥ ॥अथरववनर ८॥ नहान [illegible] ॥ ॥अथ कूर्य ८॥ ॐ निर्म्मलीयेनि

र्म्मलि यद ॥ ॥अथ तलवनर ८॥ ॐ मत्स्य मासं मालामासी ॥ ॥अथ [illegible] न ॥ ॐ ज्ञानाविज्ञान

द दीपं ॥ ॥ सर्व्व वनूतमनं नमस्कानं ॥ वाक्यं ॥ ॐ सर्व्व वन नमस्कानं ॥ गाइमा दसुखं ॥ ॐ

नि नमस्कानं ॥ खचनादि जनूदधि विनामगिगर्कनालि रुतुयर्क नामा [illegible] । वामाना मिगरव

ष्ट घय नय क्रौं द्धा [illegible] त्रिकोण मालिख्य त्रिकोणमध्ये [illegible] कार्न समालिख्य । वन्दनादिनक

पूष्प कर्पुर यवाक्वादि तालकृत्य । थामिनी हकेकि कायचित्वा पूजयत ॥ अथ ध्यानवज्ज वृत ॥ [illegible] ॥

सर्व्वं यत्र ॥ हृं सं ॥ धेनूयानि मुद्रा दर्शयित्वा [illegible] प्रासनमन्त्र ॥ अनन विधिना मछेति ॥ विद्य

पाताकर्मवस्फूं ॥

२ [illegible] उ वना सिद्ध वनु द्वीयविनि ८ कार्म क्रौं क्रीं हूं रुदू स्वाहा ॥ अथ २ सर्व्वविघ्न [illegible] यात स्वाहा ॥

ननामहापाप मूल्यानं हत्वा पाताकनन्दवना थामीनि पत्यानु सर्व्वविघ्नधारायत ॥ वाक्यं

॥ ॐ मामाकामाड्र धेनू ॥ ॥ काद्यविन्दुम हं [illegible] थामिनी गेल पूर्वं ॥ ॐ काद्यं विन्दु

लि पूर्णु ॥ स्वाहा पावयदेहं ॥ ॥ अ [illegible] पनम पूर्णुकूनि [illegible] यात ॥ ॐ त्र्यामाग क्रि [illegible]

स्वाहि ॥ गानि हृत्र पा ०७ ॥ ॥ पाकाय पूर्णुकूनि [illegible] यात ॥ सकानं भनूमा [illegible] नि । सकानसूत्र ॥

ॐ मध्य प्रासनस्का ॥ खङ्ग वामन लिङ्ग ॥ ध्यामान [illegible] ॥ ॥ [illegible] पूर्णु [illegible] यात

॥ ॐ श्रीसंदलोमत्तुलाम्क नि [illegible] ॥ ॐ श्रीनि [illegible] ॥ दियच्छुर्वा ॥ अविना [illegible] व ॥

॥ ग रू ना। गा त व ह्रू ञ्जि ॥ नमाय [illegible] यं सत्त्वम्ह ॥ न [illegible] नि ग ॥ ॥ मीसालिधूनिग
वी ग्याखदानं ग [illegible]॥ ॥ थनआलि खाविय थानि [illegible] दि सर्वर्था ॥ ॥ गगस्यर्व ध्यिति यधासं
रा वं सह [illegible] कर्ये ॥ ॥ नग ४ समयार्के सर्वत्य ४ समयंदार्थ ॥ थामिली पुहनिलि ४ सघ ४ या
उधानन नर्ग्य लाधउ ॥ आस सांय ०७ ॥ उँ [illegible] उयक्रिदध्वा ॥ १ ॥ थाभिणीवक्र मध्यह्ले ॥ २ ॥
आपदादूनि रं [illegible] गा ७ ॥ ३ ॥ सं धूप कानंधुनियाल वानी ॥ ४ ॥ यांसामाञ्च पुरा ॥ ५ ॥ नन्दनुसाध
कक्रूला ॥ ६ ॥ याध्यिवक्र मदूषका ॥ ७ ॥ [illegible] न खावदूवासथष्ठ ॥ ८ ॥ खार्भधाम्नि नसागक्ष ॥ ९ ॥
धायक्षासरुगक्षना ॥ १० ॥ सनसत्तुनिनक नमिखादि ॥ नन्दनुसाधका ४ सिद्धा ॥ दहिन ४ सखि

न ४ सत्तु ॥ तमश्री नाधाय गि ३ ॥ गुरूनापाताध्धिवीवानं ॥ पात्रा ध्म मुखीकृत्य ॥ यारु जलनिधा
य ॥ पात्रादकं ना हिषर्वं ॥ थागिन्याधिसवलीं ॥ ऊँ डुकाथा धूपयाथा ॥ चन्दन ॥ सिन्दूर ॥ सव
न ॥ माहलं ॥ ॥ ऊँ वकाववरा वक्ती लोदिनाथ व्याली वर्दि ख्वगिनसिनिधाय ॥ ॥
तत्पूर्वं गृहीत्वा ॥ ऊँ अवयूर्वगागमिलोधि मकुणा मागी वर्दि ॥ गंर्वं वलि [illegible] पनिनिधाय ॥ ॥
दूसमनुणामलीनं कृखागुणवलिविसर्जनं ॥ शिनावह्र ॥ उनमहलाधनं पूर्वं धव गार्ये सम
यथिता ॥ मूहालायनं ॥ वीनवक्र मामलाया सर्वं व [illegible] दिनानयक्ष ॥ वकाकनगणं नेव सर्वं वर्हु
१ पृथकु पृथकु ॥ वलिम्वानंदिय ७ ॥ ॥ [illegible] मधुमानं [illegible] ॥ वार्यं यथा ॥ मन्त्रं नलान

[illegible]ध्यै सर्व्वतत्त्वसदोदितं। सर्वालीनिष्ठनीत[illegible]। [illegible]नवगह्वीयात्मिक्ष्वा
नोवन्तरहितं। तत्परविविरत्नैर्रात्रि वीनस्यानन्द[illegible]॥ [illegible] अनूत्तरनमस्तु॥ ॥तत्त्वावि
विधात्त्वे ग नयथासंसरावे साक्षी ॥गीतवाद्यनृत्यादि ।वाद्यभविलासं॥ [illegible]के दानव्यै॥ ॥समया
केकान[illegible]॥समयग्रहणं॥ [illegible]यिनामृतकुलाद मूर्त्तं शुद्धी त्वासह[illegible]स्या द[illegible]॥ [illegible]दिपान्धात्त्वानर्च्य
नीकालंवै॥ [illegible]श्रीनिखिलासनक्षमि॥ [illegible]यागिनी चक्रमध्यस्थ मान्टमद्युल[illegible]ह्निनी। नमामि मनिरसाना
थ हेनवे हेनवी प्रोथे॥ [illegible]ताविद्यान्तर्संसान ध्यानकध्येसे कुरुहगव। नमः श्रीनाथवे[illegible]कुलो[illegible]
यिन॥ [illegible]यनूहनिता प्रागानू समयाचानलं घनं। सर्व्व[illegible]भव्यापारस्तु दिव्यचक्रस्य मलक॥ संपूज
कानां यत्रिया लवानां जिनन्द्रयोगीन्द्र[illegible]धनानां धर्म्मस्य नाशुस्य कुलस्य नाशुः॥ कन॥ [illegible]

गावानूकूलग॥ निन्दन्तु नानानियूतानि नव[illegible]निष्ठा निर्म्मलनानि नूयमानिनूयत्व वाद्यनिर्य नि
नक्षत्र नवगा[illegible]याग्रनाथ्य [illegible]गाक मूनया हता[illegible]का॥ नन्दनु साधक कूलान्वयदर्म
काय चान्यपत्नु यदिल[illegible]वाथ। नन्दतु सिद्धगुनवक[illegible]श्रीघा[illegible]तुगा॥ समयिना
व[illegible]॥ कुमार्य्यै[illegible]॥ यक्षा[illegible]नि प्रवनवी नकुल[illegible]नन्द [illegible]मियनत्रा द्विज साधु लाका
॥ नन्दतु[illegible]गनिनशा॥ कूलथा[illegible]युका आचार्य्य मास मनिका माधका[illegible]काय्या। [illegible]
आयू[illegible]वदूका॥ कुमार्य्यै धर्म्मचेरत्नु विश्वनाथ नेशकिप्रका॥ नन्दतु साधक कूल
[illegible]नि माथा[illegible]या॥ यनद्व समय[illegible]नानां। [illegible]नकाधि मना
[illegible]यस्यादन्ना घन[illegible]यक[illegible]मन्वल[illegible]आनातीकुलालाय

मायाः। कायर्न्द तथाम क्रियनल [illegible] तुध। [illegible] क्रासा मिथनूलन गनिलं।
निश्वास वा ग ग्र मा स्काय व्य॥ मधुयाग म्ह। [illegible] नु घ नु को लाखिगा॥ यादि व्याकूलसं
त.वा दिगिगगा या माधि वि घ्न ग्र या याग्नि त्यं प्राथना पुग्ना लि खगगा याथव ताम्नाय गा॥।
याधा मा नूग म नु ला ह्न मा मायाः॥ सर्वगा॥ सर्वदा का॥ सर्व॥ कूलमार्ग पालन यना॥गा
गार्त्ति पुयक्रनु म॥ बुद्ध श्रीसमन्द्र नागुरु वडु कनना हेन वा उत्पादि क्वाथ गा लादि सेनडाप्र
रु वस्र मनूत्म ह्नायुम ना उड्डू काया॥। स्वागन्ध ध्वविद्या वनस्त्रिपि पिन्द यदा सूना॥ किन्न नोद्या
थागीगा ध्वनगा रुद्वी पूरुख मनूस्ना ग्वक्रगा॥ पानुसर्व॥ उर्द्ध वक्रा न्तुता। गदि विरखिगम
(ग हगल निक्रलवा। पीनाक्ष वानल वा सलिलपवनथा र्य त कूतल्हिगावा। कृत्र पी। भयपी

अदिषु वक्रागयपायुघ्य धूपादिकन श्रीनादव्य॥ सदान॥ गुरा वलिविधिना पांगुवीथ न्तु
वन्द्या॥॥ दं वस्कात्वित्ति ज पव गा गज मूरवा॥ कृताधिपाहेन वा याग्निश्या वडु का ध्वयदा चिगथा
हुगा॥ यिगा जोग्रहा॥। अन्य स्वन दिक्ना नाघ्न खवना थगाल वा। ग्रु द का हू का॥ स्नू कूलयूथ
का घ्व चिगव॥ पानं सूदा पंचनू॥ सर्वथ७ हुनूवाक्षम यथि हृद वा। ग यथ्याग्निनी सीति ध्व
त्यनयव गाग्व यादिय द्व दा॥ प्रमानं हिव७। गाकार्यनादि दर्शन ह वलिव डांस्माप्य मा सा क्ति
थं त्वेग सायिवकी लिकाग्व यादिय त्सा त्वे नय॥ सर्वदा॥ हयानुमानव॥ मवस्नि नूडासगलाथि
या॥। मानिय॥ हस्य पाला ग्वम मयह वाताथ [illegible] नु कायना॥ सिद्धानन्दनुयकू न कोल

का ४ । नन्दन्तु शाकेमा ... नन्दन्तु कलथा ... ॥ आसा मा ... न सा ... सुवन
तर्य्य नमस्कार्य ४ समस्कारस्या थानी निश्चानि नक्षत्रे ॥ दुस्स्था निवारत ... स्थाय च सा सर्विकाउ
ना ४ ग बीखवचनिर्णा यालमस्तु गाथा यकल्यगी ॥ कामा ४ रुलनु वीना लीश्चानि स्यायागल
काय ४ । राजाना धार्म्मिका ४ सर्वकाल वर्षन्तु वासिता ४ ॥ शिवाद्य वनिपर्य्यके सुक्ष्मादि के रासे
यूर्ग । कालाग्न्यादि शिवान्ते यज्ञ शान्ति न ह्यरु ॥ नित्यम ... ७ ... गुरु रसी लाग्यमाक्षू
याँ ॥ शान्तिस्यात सर्व्वपापानां सर्व्वैश्वर्य्य प्रदायकं ॥ श्री वस्तु ४ षष्ठि कालानां ... कू
मानरो न वावाय्यां स्य ... कुमानमोरजानां ख्यवनीयकृ सामान्यता रावनु ॥ दर्शनं निन्दक
दूषकानां प्रश्नाजिनीनां ब्रह्माय ४ समस्तथा शिनी नामहिमनासिद्धिं कुर्वन्तु ॥ ... डान

डाहकर्तॄ । ग्रामासनदूषकानां समायिना मावस्थकानां वीरद्रव्य विनिन्दकानां कुलवधू
वे हासकानां प्राणा नृथा शिष्या रक्षन्तु नाना पुरुषस्याब्रा ... ण स्थानाश्चु स्य ४ गुरु रक्षन्तु ॥ श्री ४ शा
न्ति नन्दानिदा ४ शान्ति पृथिवी शान्ति नाय ४ शान्ति नीवधय ४ शान्ति वनस्पतय ४ शान्ति विश्वेदेवा ४
शान्ति ब्रह्म शान्ति विष्णु शान्ति रुद्र शान्ति महेश्वर शान्ति सदाशिव शान्ति शक्ति शान्ति शिव शान्ति
गुरु शान्ति शान्ति शान्ति शान्ति सर्व्व शान्ति र्भवन्तु २ ॥ अमुक कामनार्थे वीना ... विधे ४ तस्य ... सिद्धिर्भवतु
मस्तु ॥ आ ... २ कानयत ॥ पात स्वीकार्ना ॥ ... ॥ अथानन्तरं मातृका नाथ ... न कुर्य्यात ॥
सर्व्व शान्ति प्र मनवात निधाय ॥ आचार्य्यस्य ... दक्षिण ... समनदु ... ॥ गुरुणा ॥ गुरुन

नमस्कारन्यासः॥ ॐ कीं हृदया [illegible] नमः पादु पू॥ [illegible] नकारा [illegible] न्यासः॥ ॐ ह्रीं पादुकापू
जा [illegible] स्वामपूजा [illegible] पादिका [illegible] न्यासः॥ ॥गणपूजनं॥ ॐ [illegible] नाग [illegible] की
मलासनाय पादु पू॥ ॐ नागगासनाय पादु पू॥ आवाहनादि ध्यानं॥ धूम्रवर्णं महाग
मकावक्त्र त्रिलोचनं। मूलखपनहस्तं च नूद्य [illegible] व्यालम्बलाश्विनीं॥ वाम [illegible] देवी गुह्यपा
दिव्य नूपिनी। मातङ्गमातङ्गिनी देवी निर्माल्यहस्त नूपिनी॥ ध्यानं [illegible] ॐ
सिद्धिमातङ्गेश्वराय [illegible] ॐ सिद्धिमातङ्गेश्वरी शक्तिसहिताय पादु पू॥ ॥
ॐ घोराये पादु पू॥ ॐ [illegible] पाये पादु पू॥ ॐ [illegible] डाये पादु पू॥ ॥नाग माता गेश्व [illegible] री

पादु पू॥ ॐ नव मातङ्गेश्वरी पादु पू॥ ॐ वनमातङ्गेश्वरी पादु पू॥ ॐ ध्यानमातङ्गेश्वरी [illegible]
ॐ वसुमातङ्गेश्वरी पादु पू॥ वीनमातङ्गेश्वरी पादु पू॥ ॐ जयमातङ्गेश्वरी पादु पू॥ ॐ
उच्छिष्टमातङ्गेश्वरी पादु पू॥ ॥ ॐ ह्रां [illegible] यः पादु पू॥ ॐ विगाय [illegible] ॐ नादाध
स्य पादु पू॥ ॥शिवाय नमः पादु॥ ॐ गुरु नमः पादु पू॥ ॐ रक्षा [illegible] पू॥ ॐ उल्का
यै नमः पादु॥ ॥ [illegible] नी पवित्र [illegible] काय॥ [illegible] मावाग्र समान मुद्रा दर्शयेत्॥ वलि
ः॥ धूपदीप [illegible] ॥ [illegible] ॥ नमस्कार [illegible] लनादि मुद्रा [illegible] ॥

मूर्ख्वा । कुंकुम दद्यात् ॥ ॥ ॐ एकान्त [illegible] विधाय ॥ ० पूर्वं समर्पयेत्
॥ पुनर्विधायी अत्र पूर्व गृहीत्वा सर्वस्योत्तर [illegible] पूर्वं दद्यात् ॥ आगमनी [illegible]
[illegible] पूर्वं गृहीत्वा ॥ ॐ [illegible] पठित्वा [illegible] ॥ ॥ न्यासा
[illegible] नाथं विसर्जयेत् ॥ [illegible] विधेत् ॥ कलश स्नान नि
र्माल्य विधेत् ॥ [illegible] कलशस्य पवित्र दकन सर्वा [illegible] दद्यात् ॥ [illegible]
मानसमर्प्पणं ॥ ॥ [illegible] निधाय [illegible]
[illegible] ॐ नमः [illegible] ॥ [illegible] सर्वे ४ ॥ [illegible]

जा ॥ [illegible] सर्व्व ॥ [illegible] नमस्कृत्य ॥ [illegible] दीपला
जन निधाय ॥ पुन [illegible] गृहीत्वा सर्व जनानन्द [illegible] दीपलाजन [illegible] ॥ पुनस
क [illegible] कुर्यात् ॥ अथ [illegible] नमस्कारं ॥ अनेन विधिना देवी दीपयाग क्रिया
विधि । नित्य [illegible] सर्वपाप विनाशनं ॥ [illegible] यथा [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] सर्व्वकार्य्य [illegible] दीपयाग [illegible] ॥ तथास्तु ॥ [illegible] ॥ ॥ ॐ शिव
दीपार्चन [illegible] नाथ विना [illegible] दीपयाग अर्चन विधि समाप्त ॥ [illegible]
[illegible] ॥ नवमी ॥ [illegible] ॥

१ अथ दमनावगाहनं ॥ दमनकं ध्यात्वा वार्थं [illegible] नाम्हां लिस लिस [illegible] चौदृ वदुर्द्दं स्यं
कर्लर्थं गम्बु लाक्षिग ॥ लिस मूलन्हां तं यर्थं अलिस यं महुत्रखं । [illegible] यबं मा [illegible] का गम्बु नाय
खिमात्वय ॥ ॥ आचार्यादि गुविस्मात्वं ॥ सूर्यार्घ ॥ गुरुनमस्कार ॥ कन्यबक्रागन्यासं कान यथ०
॥ जलपात्र अर्घपात्र [illegible] पूजा ॥ कलशपूजा ह्मालं पूजा ॥ मालनीं यक्० ॥ पञ्चवलि ॥ (साधनं ॥ थाता न्यास
दिकर्म्मं द्वनं पवि[illegible] गाहनवत० ॥ गनाव दमनपात्र [illegible] ॥ अस्तुलभ्याकलं ॥ मूलनतिनीदंलं ॥ कव
चनावगुण्ठनं ॥ अस्तुलभ्यालं ॥ मूलनतिनीदलं ॥ कवचनावगुण्ठनं ॥ अस्तुलभ्यादलं । चीतक
मानवकाह्रलिखत० ॥ ॥ वालुकामादाय ॥ पूर्ववत् वस्तु ४ संस्कारं ॥ प्राह्मणादि मूलवत (अन
सं पूजा ॥ नवाला मनुन दमनपात्र वाक्यं पूजयेत ॥ त्रं ॐ कांकामाय हस्नपादू ॐ ॥ माथ ह्मन ॥
दमनहस्नविधित्वय ॥ नइ्यनियीनकुं ह्मानवकाह्रलिखत० ॥ ॐ पृथिव्यै नमः ॥ ॐ दमनालय ह
स्तायनमः ॥ ॐ दमनास्त्रनहस्ताद्भवायनमः ॥ ॥ ततो दमनमादाय ॥ वस्तुसंस्कारं कृत्वा ॥ ॐ
इन्द्रादि लोकपाल [illegible] न संपूज ॥ कत (अनस अआवाहु (धेनुमुद्रा ॥ ततो भावनं ॥ ॐ ल्लूं हूं लाय
दमनाङ्गभवकाय हस्ताद्भवाय दमनं भावयामि स्वाहा पादू ॐ ॥ पूर्वे ॥ ॐ मूं अनथ दमनाङ्गभव
काय हस्ताद्भवाय दमनं भावयामि स्वाहा पादू ॐ ॥ आग्नेौ ॥ ॥ ॐ मूं यमाय (गंधं पूर्ववत् ॥
दक्षिणे ॥ ॥ ॐ ह्रूं नैऋत्याय (गंधं पूर्ववत् ॥ नैऋत्ये ॥ [illegible] पूर्ववत् ॥ याहि

म॥ ॥ॐ यूं मायव लेभ्य पूर्ववत॥ वायो॥ ॥[illegible] पूर्ववत॥ [illegible]॥ ॥ॐ दूं दूं
नायलेभ्य पूर्ववत॥ ह्रीले॥ ॥ॐ डुं मध्यमायलेभ्य पूर्ववत॥ मध्य॥ ॥ॐ [illegible] ऊर्द्धायलेभ्य पू
र्ववत॥ ऊर्द्ध॥ ॥ॐ ह्रीं [illegible] नायलेभ्य पूर्ववत॥ ह्रीले॥ ॥ॐ डुं मध्यमायलेभ्य पूर्ववत॥ मध्य
॥ ॥ॐ [illegible] पूर्ववत॥ ॐ डुं ऊर्द्धायलेभ्य पूर्ववत॥ ॐ ह्रं रं हं रं नवात्मन लेभ्य पूर्वव
त॥ मध्य॥ ॥ॐ [illegible] दयायनमः॥ पादुं [illegible] लादिवत [illegible] मावाह्य। धेनुमुद्रा॥ ॐ दमनम दायन
मः॥ कामायनमः॥ नमयनमः॥ लेखविय॥ ॐ गन्धनु बायविश्व [illegible] दर्घ्यायधी मसी॥ न
नः कामदुधा दया॥ ॥ धवनअयनध ध्यान॥ कूलगायत्री ननी ध्यान॥ ॥ॐ कामा
य श॥ ॐ नगाथ नमः॥ मूलनवात्मा वत [illegible] संपूज्य॥ आवाह्य। धेनुमुद्रा॥ ॥कालग
ध वनग॥ पवित्रवत॥ आमन्त्रण वाक्य प॥ ॐ [illegible] लाग पीठि मध्यर्के कानवाद्दमन
धिरुक॥ वटु [illegible] समायु कं थागिनी सिद्ध संपूर्ण॥ आमन्त्रि तानिधि यानि कौनित्सिकरे
नवी॥ [illegible] क्रीयाले पवित्रकं। बटुकादीन समायुक्ता मूपनाग समन्विते
। नवधा [illegible] बालाव समन्कन॥ आमन्त्रि नामयाम ब्रह्मागन्धयुकं पवित्रकं।
विद्याधी समस्तेहि नथाधि रवचनी गणानु॥ ममम कुलध वग कूले [illegible] न सम न्विते। आमन्त्रि
तामया सर्व्व दमनधि [illegible] नागना॥ श्रीकौली गनन [illegible] ॥ [illegible] ॥ ऊर्द्ध गात्र

दमनक [illegible] प्रथमादीयं बलि पूजा [illegible] ॥ [illegible] गुरुं
[illegible] ॥ ॐ [illegible] आवाहनं ॥ दमनाधिवासन दमनावधारनस्य ॥ [illegible] सकल
सर्व [illegible] दमनादि [illegible] नयाय ॥ दमनावधारनार्थ अधिवासन पाय ॥ अरग आदि
अधिवासन [illegible] ॥ समयादि बलि [illegible] ॥ ॐ [illegible] दमनाधिवासनविधि
४ समाप्त ४ ॥ [illegible] स्नानादि ॥ सूर्य्यार्घ ॥ गुरु ४ पाद्य [illegible] ॥ नित्य [illegible]
[illegible] ॥ ॥ अस्त्र [illegible] दमन [illegible] ॥ [illegible] ४ [illegible] ॥ दमन काले निशा [illegible] ॥
ॐ [illegible] ॥ मध्य [illegible] ॥ [illegible] गायत्री ॥ मूल [illegible] मूल गायत्री [illegible]

[illegible] ॥ ॥ आवाहन धेनुमुद्रा ॥ ॥ ॐ [illegible] न्यास ४ ॥ [illegible] ॥ प १०७ ॥
केलास प १० याद ॥ ॐ ह्रं [illegible] दमनावधारन पा पूजा ॥ बलि ॥ आवाहन धेनु
मुद्रा ॥ ॥ अघा [illegible] दमनावधारन पा पूजा ॥ बलि ४ ॥ आवाहन [illegible]
निमुद्रा ॥ ॐ [illegible] ॥ ॥ [illegible] ॥ मूल नाम पूजा ॥ चन्दनादि [illegible] ॥ माल[illegible]
प १० [illegible] दमनावधारन पाद [illegible] यामि ॥ बलि ४ ॥ मुद्रा [illegible]
[illegible] ॥ ॐ [illegible] बलि ॥ [illegible] ॥ ॥ श्री [illegible] ॥ ॥ [illegible] ॥ त्रिसन्ध्य ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ आरति ॥ [illegible] ॥ श्री [illegible] ॥ [illegible]

वा[illegible]॥ ति [illegible]॥ कुलक्कान ॥ महावलि ॥ [illegible] वार्द्धने [illegible]
[illegible]॥ वलिक्रिय ॥ [illegible] ॥ ज वम्हाणे ॥ [illegible] ॥ [illegible] लाया ॥ अ
मन्तुलाक्ष ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ मव्हुगाव्हव ॥ ॥ [illegible] द्धाद व दक्षिणा
॥ दपाणी व्रंद ॥ आचार्य [illegible] आदि ॥ लमस्तुति ॥ कालाभीतव लाभीतसर्वनि
द्धबमन्तु ॥ ॐ दनराद [illegible] यादि ॥ दमनावपा लन [illegible] कार्द्ध
त विधेष सर्व्वीयविध [illegible] यनी ॥ ॥ ततवामूर्भूर्द्धनादिपञ्चतर्य्यती ॥ ॥
कोमानीधवर्द्धनं ॥ ॥ नको योगनटी ॥ साङ्कनंकान्तु ॥ ॥ नागीगमानक्तनं ॥ पातम्नाता

दि नित्यकर्म्म कृत्वा ॥ पूर्व्ववत्‌ सा[illegible]अनमे मिलि कधवार्द्धने ॥ आयम्हात पर्य्यन्त ॥ ॥ तत
प्रणुयाग कर्य्यात्‌ प्रथम [illegible] तथा ॥ ध्यानं दुवि[illegible] ॥ ज मूजम्निप्रलवंच पञ्चकार्ज
लारी तथा नकी ॥ [illegible] यउवुंजी ॥ मुखनन नमहाघाली नकाघात
[illegible] लोवनी ॥ [illegible] तीवी [illegible] कती ॥ व्यालरक्षा पवीत वगान्दहव
कमदल [illegible] ॥ पवकाविनालिनी ॥ पूर्व्ववत्‌ [illegible] अञ्जलिजा
[illegible] लाविल भ[illegible]त्‌ ॥ ॥ विद्भ[illegible] माद्यान्याला
[illegible] ॥ ॥ [illegible] नंकानी ॥ [illegible] लामा[illegible]

[illegible] ओमल [illegible] ॥ [illegible] लिखित [illegible]
[illegible] नर्मनम्हाथाम श्री [illegible] ननमि
[illegible] ॥
[illegible] दघान [illegible] रि [illegible] । य
थासि [illegible] आवत [illegible] नाम [illegible] मी ।
योकिनंद [illegible] अनं [illegible] यत्यय गत यिस
। [illegible] मह स्नारा [illegible] ॥ सर्व पाप विनिमुक्त । सर्वकाम
समाप्नोति ॥ [illegible] चयूतादि [illegible] गलं ॥ [illegible] वस्तु [illegible] नी याव
सख्या विक्षिपत [illegible] लय सदा ॥ वाक्य ॥ [illegible] किनी
[illegible] सिन [illegible] ॥ यमनिका थिक [illegible] ॥ [illegible] अवायाय किनी ॥ [illegible] ॥
[illegible] वलाहकल्प ॥ [illegible] अथादि ॥ [illegible] मगा [illegible] म [illegible] दी का [illegible]
[illegible] सनमक [illegible] नवामूँ [illegible] प्रान्न
[illegible] यादिनिहल्य [illegible] व बिज [illegible] वेग ॥
[illegible] ॥ स्वरीन [illegible] नानन [illegible] । वीनाणा [illegible] नन

सिको न्ह्नङ्यात ॥ यमानत्त थिगिबाखवक्कन्हङ क्हथ मुनुवलुं देज लिव

लिमसकिनया कोंगयागदयगुयमर्हसबुदब ॥ ॥ थगकोंगयाग

थखवन्तु कावभानद वयनसभालनि । खक्क नमाल नेवक्कल

थिनी । थकुल क्ामहता काम सिद्धिशनकवथव । थकुगक्वलि स्रु निनु वसु

निक्रयत्र थिनी ॥ थकुणाकुणसंकासी थकुणाकुणसंरावं । थकुण निक्वनतायं थ

कुणगनमाम्हह ॥ रिसानभाहनीद्ध वि स्त्त्थि क्लिगिवक्वाविनी । थायुपूर्णय गोरा

समाउ

यागजावक्रिकवीगुरा । ज्वबब्वासूर्पणाया निप्वहकानराजनी ॥ गियद त्वात

यंक्लि त्वा याउ थाद व्वनीछुवनी ॥ ॥ वर्कु लायं हमावनगजिकालछयानिह्रवु सा

नुस्वानं तियवनगुनु उवुनु ९ स्तविद्व श गन मकु लिखिनसाश्लोलयित्वागद

वु थाकुदयाभृगलनी यनबासनथांउ ॥ ॥ श्रयूत्रकाककु लिब बीडिछव

टकेंगुगा । खेवनंगंक्रे त्वा खवनंजनात्रमुखान ॥ ॥ खवनया ॥ ॥ जम्बेयेनु थिवात्वा

मुरामुकन्हगमवव । खवनंगसमाद्धत्वा खवलंज न्मत्रमुख्यन ॥ खवन ॥ ॥ जानसन

यकाउके स्वयगखव थिघ्रसार्पश्रीमनुके ॥ जलयवंगसमाद्धत्वा जानजन